AnZm XnU : AnZm ên

शासनगौरव साध्वी श्री राजीमती

आराधना उस साधना का नाम है जो जीवन के अंतिम क्षण तक निरतिचार चलती है। एक रूपक की भाषा में कहा जा सकता है कि यह जीवन एक घट है जिसे पवित्रता से भरना है। यदि कहीं पवित्र जल से भरते-भरते वह बीच में ही स्खलना, अपवित्रता, विराधना की चोट से फूट जाये तो उसे पुनः सांधने, भरने के लिए जो प्रयास–वीर्याचार किया जाता है उसका नाम है आराधना।

कौन ऐसा साधक होगा जो वीतरागता के पूर्व प्रमत्त नहीं होता, स्खलित नहीं होता। उस स्खलना की चिकित्सा है– आलोचना और उसका फलित है - आराधना। आराधना निष्पत्ति है, अंतिम क्षण की पूर्णता है। दाग को धोना एक प्रकार की सफाई है। दाग न लगने देना दूसरे प्रकार की सफाई है। दाग को धोना आलोचना है, और दाग न लगने देना पवित्रता, चारित्रिक-निर्मलता एवं पूर्ण साधना, आराधना है। जैन आगमों तथा ग्रंथों में स्थान-स्थान पर आराधना का सूक्ष्म विवेचन मिलता है। रोग का न होना, घाव पैदा न होना अतिश्रेष्ठ है, किन्तु हो जाने पर व्रण की तुरन्त चिकित्सा करना अत्यावश्यक है। जो साधक व्रण तो जगह-जगह पैदा कर लेता है, परन्तु उन्हें ठीक करने की विद्या नहीं जानता, बताने पर, सलाह देने पर उसका उपयोग नहीं करता, लापरवाही बरतता है - वह अश्रेष्ठ कार्य है, विराधना है।

अब प्रश्न उठता है कि आराधना कौन कर सकता है? शास्त्रों में समाधान मिलता है कि जीवन में वे ही साधक आराधना कर सकते हैं :

१. जिन आत्माओं ने रत्नत्रयी का आत्मसाक्षी से पूर्ण पालन किया है।
२. शिक्षा, दीक्षा तथा गणपोषण का कार्य किया है।
३. संलेखना आदि कार्यों में पूर्ण जागरूकता का परिचय दिया है।
४. सुख-स्वभाव का जिन्होंने त्याग कर दिया है।
५. इन्द्रिय-जय और कषाय-जय का जिन्हें अभ्यास है।
६. जिनमें ऋद्धि, रस तथा साता गौरव का अभिमान नहीं है।
७. जिनमें पर्याप्त आत्मबल तथा शरीर बल है।
८. जो प्रतिदिन प्रतिक्रमण का महास्नान करते हैं।

९. जिन आत्माओं की आसक्ति प्रबल नहीं है।

१०. जो आगमों की सविधि स्वाध्याय करते हैं।

अब पुनः प्रश्न उभरता है कि आराधना का अधिकारी कौन नहीं है :

१. जो परीषहों-कष्टों से पराजित है।

२. जो इन्द्रिय-सुखों का लम्पट है।

३. जो सेवा भावी विनम्र नहीं है।

४. जो शोभा, विभूषा करता है।

५. जो मनोबल से दुर्बल, हीन है।

६. जो विकारों से जटिल है।

ऐसा व्यक्ति आराधना का अधिकारी नहीं हो सकता।

ऐसे साधक आराधना के अवसर पर हीन-सत्त्व वाले बन जाते हैं, घबरा जाते हैं। इससे लगता है कि उनका जीवन कभी सामान्य या विशेष उलझन, असमाधि, अनाचार सम्पन्न रहा है।